एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कटहल

(*डॉ. विनोद सिंह एवं डॉ. नवीन सिंह)
कृषि विज्ञान केन्द्र, अमहित, जौनपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vinodhort1971@gmail.com

कटहल भारत का देशी पौधा है। इसके फल का उपयोग कच्चे तथा पके दोनों रूपों में किया जाता है।

जलवायु एवं मिट्टी

कटहल एक गर्म जलवायु का पौधा है। जाड़े में पाला तथा गर्मी में गर्म हवा (लू) इसकी बढ़वार एवं फलत को हानि पहुँचाता है। कटहल के लिए ऐसी मिट्टी अधिक उपयुक्त है, जो बलुई दोमट भूमि हो और जिसके जल निकास का प्रबन्ध अच्छा हो। उसरीली तथा पथरीली भूमि को छोड़कर सभी प्रकार की मिट्टी में कटहल पैदा किया जा सकता है।

किस्म

इसके कोये का रंग तथा फल के आकार की दृष्टि से कटहल की तीन तरह की किस्में होती हैं। यथा–

कटहली: यह सब्जी वाली किस्म है। इसके फल छोटे होते हैं। फल का वजन लगभग 4–5 किलोग्राम होता है।

पीले कोये वाली किस्म: यह लोकप्रिय है। फल का वजन 10–40 किलोग्राम होता है। कोये बड़े होते हैं तथा पकने पर पीले हो जाते हैं।

सफेद कोये वाली किस्म: इस किस्म के फलों का वजन लगभग 30 किलोग्राम होता है। इसके कोये पकने पर दूध की भाँति सफेद, रसदार एवं काफी मुलायम होते हैं।

पौध की तैयारी एवं रोपण

कटहल के पौधे को मुख्यतः बीज द्वारा तैयार किया जाता है। आम तौर से रोपण के 8–10 वर्षों के बाद कटहल में फलत होती है। प्रयोगों द्वारा देखा गया है कि पेबन्दी चश्मे द्वारा इसकी कलम भी तैयार की जाती है। इसके लिए सर्वोत्तम समय बैसाख से आषाढ़ (मई से जुलाई) तक है। कटहल के पौध लगाने का सर्वोत्तम समय आषाढ़, श्रावण (जुलाई–अगस्त) है। पौधे माघ, फाल्गुन (फरवरी–मार्च) में भी लगाये जा सकते हैं। पौध से पौधे तथा पंक्ति से पक्ति की दूरी 12–15 मीटर रखनी चाहिए। पौध रोपण करने के 1.5 माह पहले ही एक मीटर व्यास के एक मीटर गहरे गड्ढे खोद लेने चाहिए। इन्हें 15–20 दिन खुला छोड़ने के बाद सड़ी हुई गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट तथा मिट्टी की समान मात्रा से भर देना चाहिए। गड्ढा भरते समय 50 ग्राम वी.एच.सी. प्रति गड्ढा की दर से डाल देना चाहिए ताकि दीमक का प्रकोप न हो सके। गड्ढा भरने के बाद इनकी सिंचाई कर देनी चाहिए ताकि मिट्टी अच्छी तरह बैठ जाय। इस प्रकार से तैयार गड्ढों में पौधे लगाने चाहिये।

खाद एवं उर्वरक

एक वर्ष की आयु के पौधे को 10 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट, 150 ग्राम नाइट्रोजन, 75 ग्राम फास्फोरस तथा 100 ग्राम पोटाश एवं एक क्विण्टल सड़ी गोबर की खाद देना

चाहिए। उर्वरक की पूरी मात्रा को दो बराबर भागों बांटकर आधा भादों–क्वार (सितम्बर–अक्टूबर) में तथा शेष आधा भाग माघ–फाल्गुन (फरवरी–मार्च) में देना चाहिए। जैविक खाद का प्रयोग जेष्ठ–आषाढ़ (जून–जुलाई) के महीनों में करना चाहिए।

सिंचाई

पौध लगाने के बाद सिंचाई कर देना चाहिये। जाड़ों के महीने में दो बार तथा गर्मियों में 3 बार आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिये।

हानिकारक कीट एवं रोग

इसके प्रमुख कीट एवं रोग निम्नलिखित हैं:

तना छेदक कीट: यह कीट मुख्य तने एवं शाखों में सुरंग बनाकर हानि पहुँचाता है। रोकथाम हेतु सूराख में पेट्रोल, मिट्टी के तेल में रूई भिगोकर या सेल्फास भर कर चिकनी मिट्टी से बन्द कर देना चाहिये।

मिलीवग: यह कीट फूलों उनके डंठलों, शाखों आदि का रस चूसकर कमजोर बना देता है, जिससे अथवा फल सूखकर गिर जाते हैं। रोकथाम हेतु बैसाख–जेष्ठ (मई–जून) के महीने में वृक्ष के चारों तरफ जुताई कर देना चाहिए। मादा कीट को पौधों पर चढ़ने से रोकने के लिये पौष (दिसम्बर) माह में ग्रीस का चिचिपा बैंड अथवा 400 गेज मोटी पालीथीन 30 सें.मी. चौड़ी पट्टी बाँध देनी चाहिए।

फल सड़न: यह रोग फफूंदी के कारण होता है। इसका प्रकोप होने पर फल सड़ कर काले पड़ जाते हैं तथा गिरने लगते हैं। रोकथाम हेतु डायथेन एम–45 अथवा डायथेन जेड–78 के 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर) दवा का दो अथवा तीन बार छिड़काव करना चाहिए।

उपज

पूरी तरह विकसित कटहल के एक वृक्ष से एक से लेकर 10 क्विण्टल तक फल प्राप्त होता है।